गुरुपूर्णिमा के अवसर पर महिमा गुरु की

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपतिसम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

भारत में गुरु को, शिक्षक को, विद्यादाता को, मंत्रदाता को, मागदर्शक को सर्वोच्च श्रद्धा का अधिकारी माना गया है। जो देश ज्ञान के पूजक हैं, उन सब में गुरु को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। कृष्ण जगद्गुरु हैं, वेदव्यास मंत्रगुरु हैं, इसलिए हम उन्हें पूजते हैं। गुरु नानक और गुरु गोविन्दसिंह तक दस गुरु मार्गदर्शक होने के कारण पूजे जाते हैं। उनके बाद उनकी गुरुपरम्परा ग्रन्थसाहेब में समाहित हुई, इसलिए ग्रन्थ की पूजा होती है। कबीर का यह दोहा प्रसिद्ध है -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि गोविन्द से बड़ा गुरु होता है, बल्कि इसका आशय यह है कि ज्ञान का महत्त्व तभी है, जब हम उसे अधिगत कर लें, अतः उस ज्ञान को हम तक पहुँचाने वाला महत्त्वपूर्ण है - वह गुरु हो या ग्रन्थ। हमारे यहाँ तो श्रीमद्भगवद्गीता की तरह एक गुरुगीता का पाठ भी बहुत से आस्तिक लोग करते हैं, जिसके कुछ पद्य तो जन-जन के कंठ में बैठे हुए हैं-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

''गुरु में ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश का दर्शन होता है। वे स्वयं परब्रह्म हैं, अतः मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ।' यह गुरुगीता स्कन्दपुराणान्तर्गत बतायी जाती है।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

जो गुरु अज्ञान के अन्धकार में दृष्टिहीन बने। अबोध शिष्य ही ऊँची आँखों को ज्ञान का अंजन लगा कर ज्योतित कर देता है, उससे अधिक प्रणम्य कौन है?

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

जो अखंड, अनादि ब्रह्म चराचर में व्याप्त है, उसका ज्ञान देने वाला गुरु ही तो है, उसे प्रणाम।

जाबालिसंहिता में कहा गया है -

वन्दे गुरुपदाब्जं यो नररूपः स्वयं हरिः।
यद्वाक्यसूर्योदयतस्तमो नश्यति सांप्रतम्।

इसका अनुवाद गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने यों किया है-

बन्दउँ गुरुपदकंज कृपासिन्धु नररूप हरि।
महामोह तमपुंज जासु बचन रविकरनिकर।।

अर्थात् गुरु की वाणी वह सूर्य है जो अज्ञान के अन्धकार का नाश कर देती है। गुरु की यह प्रतिष्ठा इस तथ्य का प्रमाण है कि यह देश ज्ञान, अध्ययन, शोध और विद्या का आराधक रहा है। उत्कृष्ट ज्ञान जहाँ से भी प्राप्त हो, उसको श्रद्धापूर्वक ग्रहण करना हमारा लक्ष्य रहा है। तभी तो दत्तात्रेय जैसे मनीषी ने अपने चौबीस गुरु बतलाए। उन्होंने मधुमक्खी से सार ग्रहण करना सीखा, हाथी, अजगर, हिरन आदि से उनके गुण सीखे। हमने गुरु की परिभाषा पर भी विचार किया है।

कूर्मपुराण में कहा गया है -

यो भवयति यः सूते येन विद्योपदिश्यते।
ज्येष्ठो भ्राता च भर्ता च पंचैते गुरवः स्मृताः।।

हमें अस्तित्व में लाने वाला पिता तथा जन्म देने वाली माता ये नैसर्गिक गुरु हैं, प्रथम शिक्षक हैं। फिर ज्ञान देने वाला शिक्षक गुरु है। बड़ा भाई सदा सीख देता है। विवाह के बाद पत्नी को पति मार्गदर्शन देता है। ये सभी नैसर्गिक गुरु हैं।

प्रतिवर्ष आषाढी पूर्णिमा को गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया जाता है। इसका कारण तो यह है कि वेदव्यास की जयन्ती आषाढी पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। वेदव्यास इस देश के जनजीवन के साथ इस प्रकार अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं, कि वेदों की समस्त ऋचाओं का संपादन और वर्गीकरण करके उन्होंने चार वेद प्रतिष्ठित किये, अठारह पुराणों की रचना की, महाभारत और श्रीमद्भागवत का प्रणयन भी उन्होंने ही किया। इस प्रकार वे वेदों को पुराणों से जोड़ने वाली कड़ी तो हैं ही, अद्वैत दर्शन और भक्तिमार्ग के भी आदि स्रोत कहे जा सकते हैं।

बादरायण व्यास ने उन वेदान्त सूत्रों की रचना की, जिन्हें ब्रह्मसूत्र भी कहा जाता है और जिनका अपने अपने दर्शन के दृष्टिकोण से भाष्य लिख कर शंकराचार्य ने अद्वैत दर्शन की प्रतिष्ठा की तथा रामानुज, निम्बार्क, मध्व, वल्लभ, चैतन्य, रामानन्द आदि विभिन्न वैष्णव आचार्यों ने ब्रह्मसूत्रों की व्याख्या अपनी दृष्टि से करते हुए विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत शुद्धाद्वैत, अचिन्त्याद्वैत, रामाद्वैत आदि संप्रदायों का प्रवर्तन कर वैष्णव भक्ति की ऐसी अमर भागीरथी बहायी, जिसकी अमृतधारा में भारत की बड़ी जनसंख्या आज भी नहा रही है। इन गुरुओं से दीक्षा ले कर करोड़ों भारतीय आज तक आराधना में तत्पर है। वे गुरुपूर्णिमा के दिन ही इन गुरुओं को श्रद्धासुमन इसीलिए चढ़ाते हैं कि, जिन बादरायण व्यास के ब्रह्मसूत्रों की व्याख्या कर विभिन्न आचार्य जगद्गुरु बने हैं, उन व्यास की जयन्ती आषाढ़ी पूर्णिमा को मनायी जाती है। व्यासपूर्णिमा को गुरुपूर्णिमा कहे जाने का यही रहस्य है।

वेदवाणी

भद्रमिच्छन्त ऋषयः, स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातम्, तदस्मै देवा उप संनमन्तु।।

सब का कल्याण चाहने वाले और सुख-प्राप्ति की विद्या के ज्ञाता ऋषियों ने पहले तप और नियमपालन की शिक्षा का अनुष्ठान किया। उसी से राष्ट्र, उसका बल और पराक्रम सिद्ध हुए। विद्वानों को चाहिए कि ऐसे राष्ट्र को अपना पूरा पूरा सहयोग दें।

Those who wished the welfare of all and who knew the path of happiness, such sages first practiced penance and carried on good rules. Due to this the nation, its power and velour came into existence. All scholars should co-operate fully with such a nation.